

रीढ़ की हड्डी



द पैलेस स्कूल

सिटी पैलेस, जयपुर (C.B.S.E. से संबद्ध)

कक्षा - नवीं



0956CH03



पुरुष प्रधान समाज

लैंगिक असमानता

नारी शोषण

रूढ़िवादिता

दहेज प्रथा



प्रस्तुत एकांकी, सी.बी.एस.ई. व राष्ट्रीय
शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
(N.C.E.R.T) हिंदी (भाग 'अ') के

पाठ्यक्रमानुसार

कक्षा - नवीं की पूरक पाठ्यपुस्तक
'कृतिका' (भाग-1) से ली गई हैं, जिसके
लेखक जगदीश चंद्र माथुर हैं।

चित्रात्मक आलेख- द पैलेस स्कूल,
सिटी पैलेस, जयपुर, राजस्थान।

प्राचार्या की कलम से

"परिवर्तन का रहस्य अपनी सारी ऊर्जा को पुरानी चीज़ों से लड़ने पर नहीं, वरन् नवनिर्माण पर केंद्रित करना है।" किसी बुद्धिजीवी द्वारा कही गई यह पंक्ति पूर्णतः सत्य है क्योंकि आवश्यकता नवीनता और परिवर्तन की जननी है। शिक्षा जगत में भी नवीन विचारों तथा परिवर्तन का आगमन आवश्यकतानुसार होता रहता है और शिक्षा के क्षेत्र में बदलते परिदृश्य के साथ समन्वय करने, शिक्षा को नवाचारों के माध्यम से आकर्षक व रोचक बनाने हेतु यह चित्रात्मक आलेख सहायक सिद्ध होगा। इस चित्रात्मक आलेख का निर्माण हम सभी के लिए अनूठा अनुभव रहा है। इस चित्रात्मक आलेख में भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यपत्रक, अभ्यास पत्रक जोड़े गए हैं, जिससे विद्यार्थियों में अनुभव के आधार पर तथ्यों के विश्लेषण करने की क्षमता का विकास होगा तथा विद्यार्थियों के सीखने और समझने की प्रक्रिया सरल, सुबोध और रोचक बनेगी। यह चित्रात्मक आलेख हिंदी विभाग, कला विभाग व आईटी विभाग के शिक्षक-शिक्षिकाओं के अथक प्रयासों का परिणाम है। इस चित्रात्मक आलेख को प्रारूप देने व सभी के लिए इसे उपलब्ध कराने के लिए हम सी.बी.एस.ई. के आभारी हैं। श्री संदीप सेठी (डायरेक्टर एजुकेशन एम. एस. एम. एस. द्वितीय म्यूजियम) के भी बहुत आभारी हैं जिनके बहुमूल्य सहयोग, निरंतर प्रेरणा और मार्गदर्शन ने सदैव हमें प्रोत्साहित किया है। मैं आशा करती हूँ कि शिक्षा जगत में यह चित्रात्मक आलेख रचनात्मक रूप से सुदृढ़, रोचक व अमूल्य सिद्ध होगा। इसी आशा से यह प्रयास किया गया है।

धन्यवाद

उर्वशी वॉरमैन

(प्राचार्या)

अरुवीकरण

‘द पैलेस स्कूल’, जयपुर द्वारा कृत यह चित्रात्मक आलेख जगदीश चंद्र माथुर द्वारा रचित एकांकी ‘रीढ़ की हड्डी’ पाठ्यपुस्तक कृतिका, कक्षा नवीं को आधार बनाकर तैयार की गई है। इसके प्रारूप निर्माण या पटकथा में मूल पाठ में वर्णित तथ्यों को यथावत प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथा विद्यार्थियों के लिए पाठ को रोचक बनाने, नवीन शैक्षणिक प्रयोग की दृष्टि से, सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रदत्त निर्देशों का पालन करते हुए उक्त रचना की गई है। इसका उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी को बदलना नहीं है। यह पूर्णतः काल्पनिक है, इसके प्रारूप में कथा की रोचकता बनाए रखने के लिए कुछ काल्पनिक पात्रों, संवादों व घटनाओं का प्रयोग किया गया है जिनका वास्तविक जीवन में मिलना मात्र संयोग होगा।

अनुक्रमणिका

क्रम स०	विवरण
१	साभार
२	आमुख
३	सीखने के प्रतिफल
४	पात्र -परिचय
५	दृश्य आरेखण
६	चित्रात्मक आलेख
७	विषय एकीकरण गतिविधि
८	अनुभवात्मक गतिविधि
९	शब्दावली
१०	उत्तरमाला

साभार

चित्रात्मक आलेख निर्माण समिति

प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख विद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षाविदों के सम्मिलित प्रयासों का परिणाम है। इस आलेख के सहायक कथा के सभी पात्र व घटनाएँ काल्पनिक हैं।

परिकल्पना	श्रीमती उर्वशी वॉरमैन (प्राचार्या)
मुख्य सलाहकार	श्री संदीप सेठी (डायरेक्टर एजुकेशन एम.एस. एम.एस. द्वितीय म्यूजियम)
विभागाध्यक्ष	डॉ. श्वेता गौड़
संवाद लेखन	श्रीमती सुमन जाँगिड़, श्रीमती मंजू शर्मा
कला संकाय	श्रीमती रेखा करणावत, श्रीमती वंदना यादव
तकनीकी संकाय	श्रीमती नीलिमा बज, श्रीमती अरुणा पावा

प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख में पात्र प्रेमा (उमा की माँ) के लिए चित्र 'दिल्ली पब्लिक स्कूल, जयपुर' द्वारा साझा की गई चित्रावली से लिया गया है। हम उनका हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

आमुख

प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख में एक शिक्षित, स्वावलंबी और आत्मगौरव से परिपूर्ण लड़की उमा के माध्यम से रूढ़िवादी लोगों, समाज में फैली लैंगिक असमानता, विवाह की रूढ़िवादी व्यवस्था और व्यावसायिक मनोवृत्ति पर करारा प्रहार किया है। समाज में फैली दहेज प्रथा जैसी कुप्रथाओं के कारण रामस्वरूप जैसे पिता को अपनी बेटी का विवाह करने के लिए लड़के वालों के सामने उसकी योग्यता को छुपाना पड़ता है। दूसरी तरफ लड़के के पिता गोपाल प्रसाद जैसे व्यक्ति लड़की वालों को हेय समझकर लड़की को भेड़-बकरियों की तरह तौलते हैं एवं अपने पुत्र की चरित्रहीनता एवं अयोग्यता को छुपाते हैं। कथानक को आधुनिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ते हुए गरिमा के माध्यम से यह बताया गया है कि लड़कों के साथ-साथ लड़कियाँ भी उच्च शिक्षा तथा सम्मान की अधिकारिणी हैं क्योंकि लड़कियाँ भी लड़कों के समान ही हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

सीखने के प्रतिफल

- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग, भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास करना।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास करना।
- हिंदी भाषा विधा - संवाद लेखन को भलीभाँति समझाना।
- विद्यार्थियों के मन में मानव व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के प्रति समझ का विकास होगा।
- चिंतन - मनन की प्रवृत्ति का विकास।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ना और उपयोग करना।
- भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि का विकास होगा।



रामस्वरूप (उमा के पिता)

50 - 53 वर्ष

पुत्री के विवाह को लेकर चिंतित



प्रेमा (उमा की माता)

48- 50 वर्ष

कुशल गृहिणी ,पुत्री के विवाह को लेकर चिंतित

पाठ्य संबंधित सचित्र पात्र परिचय



मुख्य पात्र- उमा

24 - 25 वर्ष

बी. ए .पास ,दृढ़ निश्चयी ,स्वाभिमानी, मेहनती,
समझदार, निर्भीक, शिक्षित महिला



शंकर-26 - 27 वर्ष

उमा को देखने आने वाला युवक,
कमर झुकी हुई, दकियानूसी विचारों वाला,
स्वाभिमान की कमी, स्त्री शिक्षा का विरोधी



गोपाल प्रसाद (शंकर के पिता)

50 - 53 वर्ष

वकील ,विवाह को व्यापार मानने वाले व्यक्ति,
दकियानूसी विचारों वाले,स्त्री शिक्षा के विरोधी

काल्पनिक सचित्र पात्र परिचय



पोता (गर्वित)

16 वर्ष

चंचल, जिज्ञासु



दादी

70 वर्ष

अनुभवी और समझदार



पोती(गरिमा)

29 वर्ष

न्यायाधीश, सुशील,
शिक्षित, समझदार,
आज्ञाकारिणी युवती

दृश्य आरेखण

1

दादी, गर्वित और गरिमा के बीच
विवाह के संबंध में बातचीत।

2

रामस्वरूप व प्रेमा द्वारा उमा को देखने आने
वाले मेहमानों के स्वागत की तैयारियाँ करना।

6

दादी द्वारा अपने पति के सहयोग का
उल्लेख तथा वर्तमान में लड़कियों को
हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए बताना।

3

गोपाल प्रसाद व शंकर का रामस्वरूप के
घर आना तथा गोपाल प्रसाद का शंकर को
कमर सीधी करके बैठने के लिए कहना।

5

उमा द्वारा लैंगिक समानता के महत्त्व
को समझाना तथा रामस्वरूप को
अपनी गलती का पश्चाताप होना।

4

गोपाल प्रसाद व शंकर का उमा
से प्रश्न पूछना तथा उमा द्वारा
शंकर की कमियाँ बताना।

रीढ़
की
हड्डी

बगीचे में दादी, गर्वित और गरिमा कुर्सियों पर बैठे हुए वार्तालाप कर रहे हैं।

तुम्हारी दीदी गरिमा ने न्यायाधीश के पद को प्राप्त करके हमारे पूरे परिवार का नाम रोशन किया है।

हाँ दादी, यह बड़े गर्व की बात है।



यदि तुम भी मन लगाकर पढ़ाई करोगे तो अवश्य सफल हो जाओगे।

हाँ दीदी।



अच्छा गरिमा, शादी के विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं?



मैंने तो अभी इस विषय पर कुछ सोचा ही नहीं।



दादी आपकी शादी के बारे में
कुछ बताइये ना, आपने दादा जी
को कैसे पसंद किया था?

क्यों अपनी दादी से
ठिठोली कर रहे हो?

2

हाँ दादी ! बताइए ना।





गरिमा, मुझसे तो राय
पूछी गई थी लेकिन सभी
परिवारों में ऐसा नहीं होता
था।

मेरी एक सहेली थी, उससे
उसकी शादी के विषय में
कुछ भी नहीं पूछा गया।



फिर आपकी सहेली ने
बिना कुछ बोले ही शादी
कर ली।

नहीं बेटा, यह एक बहुत बड़ा
किस्सा है।



दादी, हमें भी वह किस्सा
सुनाइए।



पुरानी बातें
याद करते
हुए।

गतिविधि - 1

समास - दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नया सार्थक शब्द बनने की क्रिया को समास कहते हैं।

जैसे - हवन के लिए सामग्री - हवन सामग्री
समास का अर्थ है संक्षेपीकरण ।

समास के चार भेद हैं -

- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास - कर्मधारय समास व द्विगु समास
 - द्वन्द्व समास
 - बहुव्रीहि समास

गतिविधि 1 - बूझो तो जानो



जहाँ पहला पद अव्यय,
वही पद प्रधान,
बोलो उसका नाम?



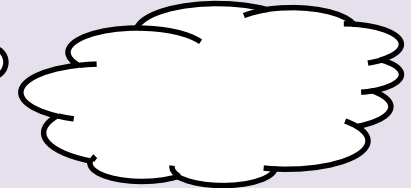
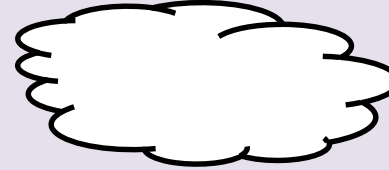
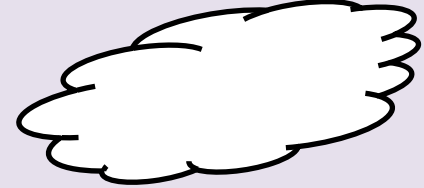
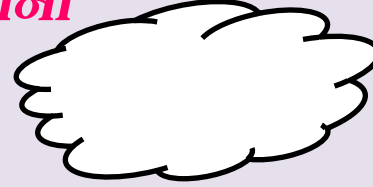
जहाँ दोनों पद प्रधान,
अब तुम बताओ उसका
नाम?



जहाँ दोनों पदों में हो
संबंध विशेषण- विशेष्य
और उपमेय- उपमान, अब
तुम बूझो उसका नाम?



जहाँ हो लोप कारक चिह्न,
और हो उत्तर पद प्रधान। अब
सोचो तुम उसका नाम?



गतिविधि 2 - नीचे दिए गए वाक्यों को उनके भेद से मिलान कीजिए।

1. कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

आज्ञावाचक वाक्य

2. क्या कहा! मक्खन नहीं है।

प्रश्नवाचक वाक्य

3. कॉलेज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं।

निषेधात्मक वाक्य

4. शंकर एक साल बीमार हो गया।

विस्मयादिबोधक वाक्य

5. ब्याह तय करने आए हो कमर सीधी करके बैठो।

विधानवाचक वाक्य

दादी किस्सा सुनाने लगती हैं। (उनकी सहेली उमा को देखने आने वाले मेहमानों के स्वागत की तैयारियाँ चल रही हैं।)



मेरी समझ में यह
पढ़ाई-लिखाई के
जंजाल आते नहीं।

चलो छोड़ो। तुम यह
बताओ कि नाश्ता तो
तैयार है ना?

नाश्ता तो तैयार है। हाँ,
मगर मक्खन नहीं है।

क्या कहा! मक्खन नहीं है।

रतन, जल्दी से बाज़ार से
मक्खन लेकर आ।

जी बाबू जी।

उमा से कहना कि
मेहमानों के सामने ज़रा
सलीके से आए।

हाँ, इसी कारण मैंने तो पाउडर-वाउडर
उसके सामने रखे भी थे पर उसे तो
इन चीज़ों से न जाने किस जन्म की
नफ़रत है।



अचानक नौकर प्रवेश करता है।

बाबूजी, बाबूजी! मेहमान आ
गए हैं।



रामस्वरूप मेहमानों का स्वागत करते हैं।

नमस्कार! भीतर
आइए।



आपको घर ढूँढने में कोई
कष्ट तो नहीं हुआ?

जी नहीं, ताँगेवाला
जानता था।





आदमी तो भला है, मकान -वकान
भी अच्छा है, पता नहीं लड़की
कैसी होगी?

जी पिताजी।

झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो कमर
सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर
के बैकबोन है भी या नहीं ?

बैठो बेटी।

चश्मा!

जी, वह तो.... पिछले महीने में इसकी आँखें दुखनी आ गई थीं, तो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।



पढ़ाई -वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ ?

नहीं साहब।



जी साहब, बात यह है कि हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। बस अधिक से अधिक मैट्रिक पास होनी चाहिए।

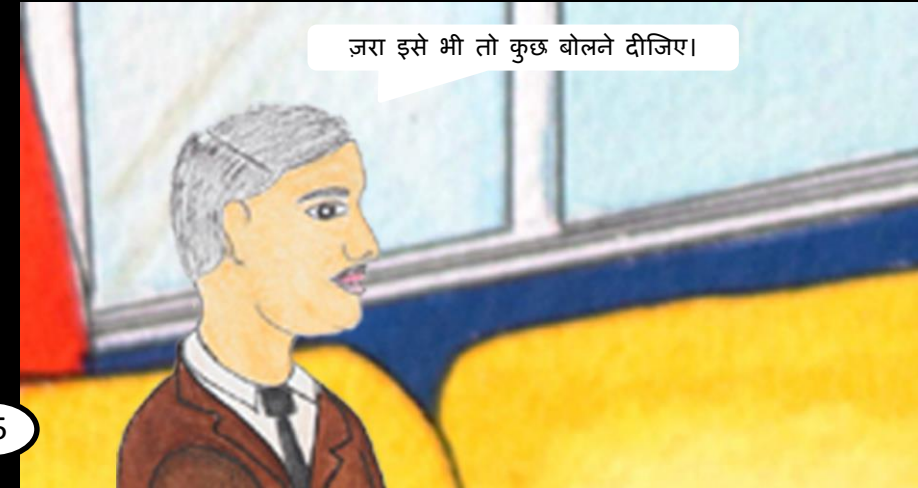
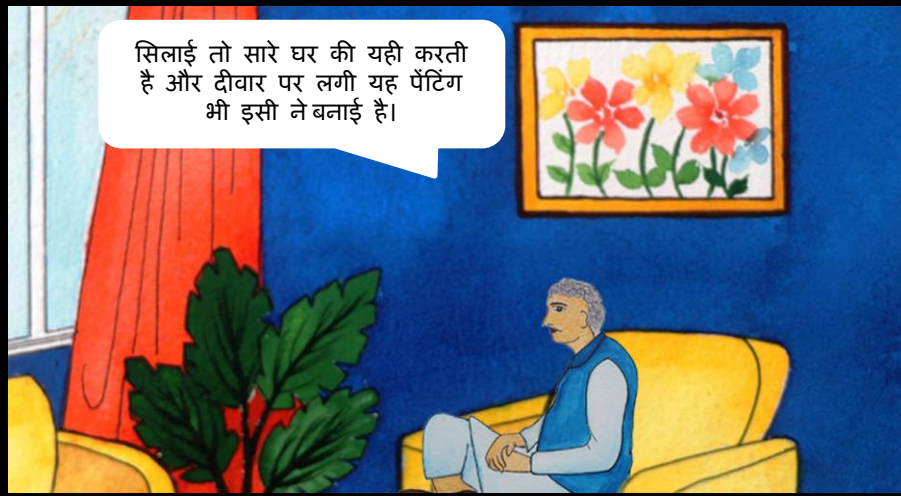
हाँ पिताजी, हमें कोई नौकरी तो करवानी नहीं है। वैसे भी मर्दों का काम तो पढ़ना और काबिल होना है और औरतों का काम है गृहस्थी संभालना ।





उमा सितार उठाकर मीरा का भजन गाना शुरू कर देती है। अचानक उसकी आँखें शंकर की झंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते- गाते रुक जाती है।







जवाब दो बेटी।



क्या जवाब दूँ बाबूजी! इन्होंने तो मुझे कोई वस्तु समझ रखा है। ज़रा इन महाशय से पूछिए कि क्या इनका बेटा सर्वगुण संपन्न है?

चुप रहो उमा।



क्या आपने हमें यहाँ हमारा अपमान करने के लिए बुलाया है?



जी हाँ। आप भी तो हमारा अपमान ही कर रहे हैं और ज़रा अपने लाडले से भी तो पूछो कि पिछली फरवरी में लड़कियों के छात्रावास के आस-पास क्यों घूम रहे थे?

क्या! तुम कॉलेज में पढ़ी हो?

जी हाँ ।

आपने तो बताया कि आपकी
बेटी मैट्रिक पास है।

मैंने बी. ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और
न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँक कर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी
इज्जत, अपने मान का खयाल तो है।

बाबूजी, अब यहाँ से चलिए।

हाँ जाओ, वैसे भी मुझे तुम जैसे चरित्रहीन
व अयोग्य लड़के से विवाह भी नहीं
करना।

चलो बेटा, वैसे भी इन्होंने हमारा बहुत अपमान किया है।



जी हाँ, अवश्य चले जाइए लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइए कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी है भी या नहीं।



प्रेमा रोने लगती है और उमा अपने माता-पिता को समझाती है।

माँ चुप हो जाइए । यह तो अच्छा हुआ कि हमें समय पर शंकर की चरित्रहीनता का पता चल गया।



हाँ बेटा, गलती तो मुझसे भी हुई है जो मैंने उनके सामने तुम्हारी शिक्षा की बात छिपाई।



हाँ, मुझे भी अब
एहसास हो रहा है कि
लड़कों के साथ-साथ
लड़कियों की शिक्षा
पर भी विशेष ध्यान
दिया जाना चाहिए।

हाँ, तुम ठीक कहती
हो। स्त्री और पुरुष
तो गाड़ी के दो पहियों
की तरह हैं, यदि एक
छोटा या बड़ा होगा
तो जीवन रूपी गाड़ी
डगमगा जाएगी।

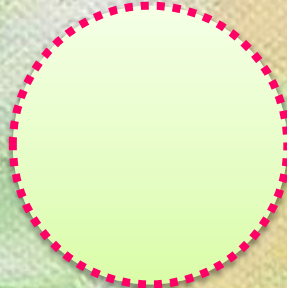
हाँ, समाज से लैंगिक असमानता को
समाप्त कर देना चाहिए। अच्छा
पिताजी, मैं अब पढ़ने के लिए अपने
कमरे में जा रही हूँ।

गतिविधि 3- निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द अलग करके उनके सामने दिए गए गोले में लिखिए।

सफल



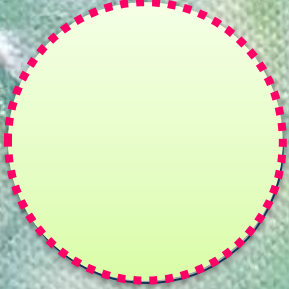
प्रबल



अपमान



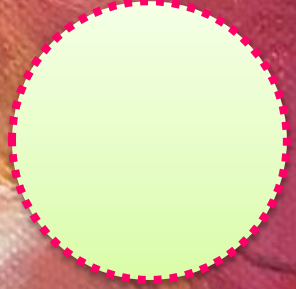
स्वागत



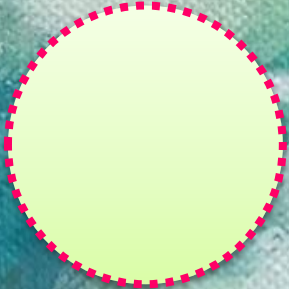
समझदार



ताँगेवाला



पढ़ाई



उपकार



सामाजिक





हाँ बेटी, तुम सही कह रही हो। अब शंकर जैसे लोगों की मानसिकता को बदलना होगा। आज लड़कियाँ भी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हवाई जहाज चला रही हैं, वैज्ञानिक बनकर नए-नए अनुसंधान कर रही हैं।



दादी आपकी सारी बातें सुनकर तो मेरा आत्मविश्वास और अधिक प्रबल हो गया है।

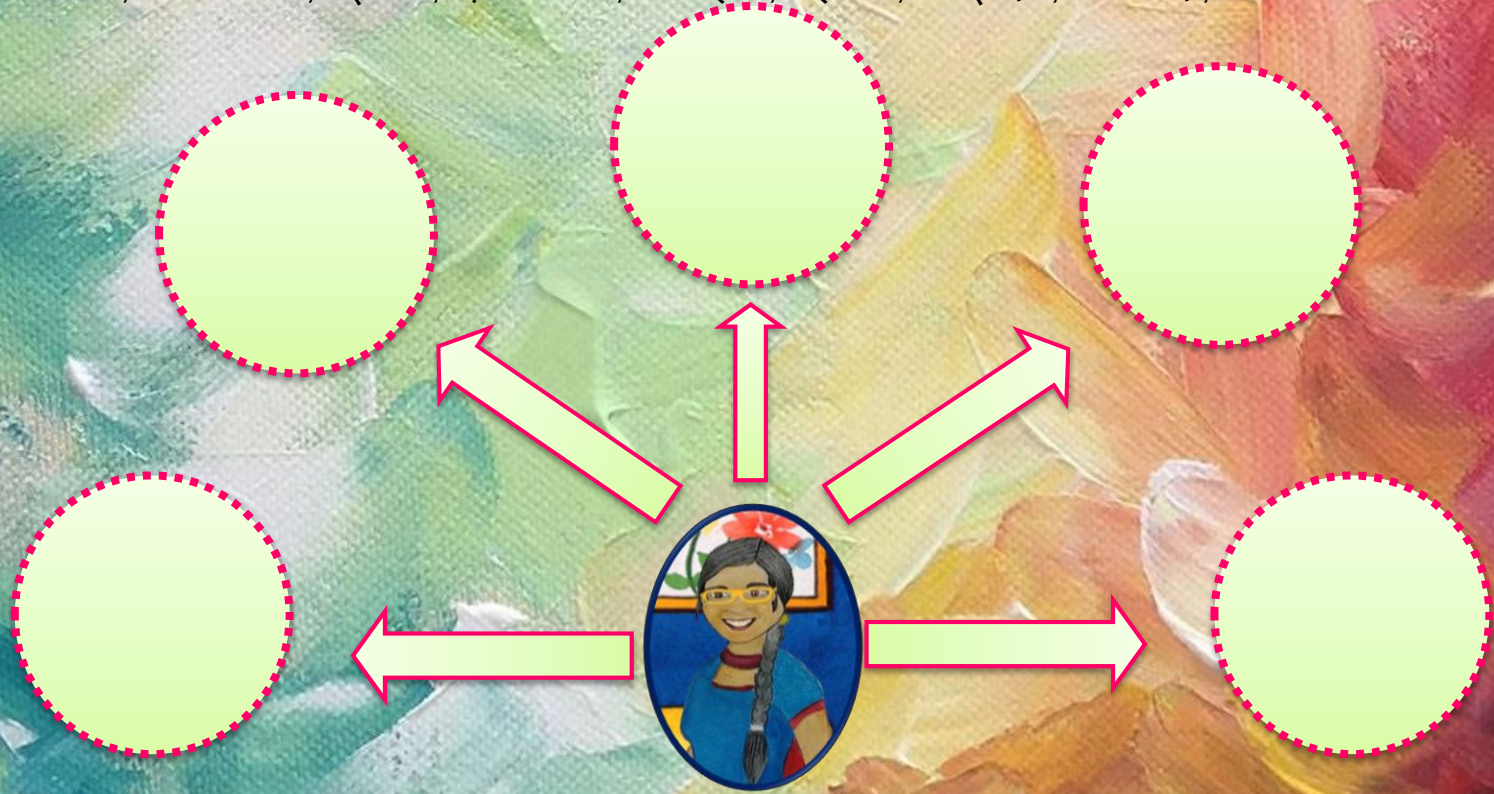


हाँ बच्चों, अब बहुत देर हो गई है। चलो, अब अंदर चलकर खाना खा लेते हैं।



गतिविधि 4 - नीचे दी गई विशेषताओं में से उमा की चारित्रिक विशेषताओं को बताते हुए फ्लो चार्ट को पूरा कीजिए।

आलसी, स्वाभिमानी, बेईमान, दृढ़ संकल्पी, चरित्रहीन, मेहनती, समझदार, स्पष्टवादी, लालची



गतिविधि 5- एकांकी में आए युग्म शब्द छाँटकर लिखिए।

जैसे :-

1. मकान- वकान

विषय एकीकरण गतिविधि

सामाजिक विज्ञान
ऐसे पाँच राज्यों को भारत के मानचित्र में दर्शाइए जो स्त्री शिक्षा में अग्रणी हैं।

अनुभवात्मक गतिविधि

- समाज में महिलाओं की समस्या को उजागर करते हुए महिला आयोग की अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए कि वे इन समस्याओं का समाधान करें।

शब्दावली

- ठिठोली- हँसी- मजाक
- सहमति -एकमत होना
- मैट्रिक-दसवीं
- जतन- प्रयास, कोशिश
- दकियानूसी- पुराने या पिछड़े विचारों वाला
- पुरस्कार-इनाम
- सर्वगुण संपन्न- सभी गुणों से युक्त
- लैंगिक- लिंग से संबंधित
- खुशनसीब- जिसका भाग्य अच्छा हो।
- आत्मविश्वास- अपनी शक्ति व योग्यता पर विश्वास
- अनुसंधान- खोज
- जंजाल- झंझट
- अधेड़- पक्की उम्र, 50 के करीब

उत्तरमाला

गतिविधि 1- अव्ययीभाव समास, द्वंद्व समास, कर्मधारय समास, तत्पुरुष समास

गतिविधि 2 - 1.प्रश्नवाचक वाक्य 2.विस्मयादिबोधक वाक्य 3. निषेधवाचक वाक्य 4. विधानवाचक वाक्य 5.आज्ञा वाचक वाक्य

गतिविधि 3 - फल, बल, मान

गत, समझ, ताँगा

पढ़, कार, समाज

गतिविधि 4 - स्वाभिमानी, दृढ़ संकल्पी, मेहनती, स्पष्टवादी, समझदार

गतिविधि 5 - पाउडर- वाउडर, सिलाई -विलाई, खाना-वाना, पेंटिंग -वेंटिंग

धन्यवाद !

